IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नारी शिक्षा के अग्रदूत : महात्मा ज्योतिबा फुले

कृष्ण कुमार[1], डॉ. प्रतीत कुमार [2]

[1]शोध छात्र, [2]प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

जनता वैदिक कॉलेज, बडौत, बागपत (उ.प्र.), भारत

संबध. चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.), भारत

सार –

19वीं शताब्दी में भारत में जो सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन शुरू हुए, उसके लिए अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियों ने प्रयत्न किये । उन प्रबुद्ध व्यक्तियों मे महात्मा ज्योतिबा फुले का नाम भी शामिल है। फुले एक क्रान्तिकारी सोच के व्यक्ति थें, वे भारतीय सामाजिक क्रान्ति के पिता कहलाए, क्योंकि उन्होंने तत्कालीन प्रचलित सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी। उन्होंने हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर महिलाओं और निचली जातियों के अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें सच्चा महात्मा एवं डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपना गुरु कहा। अतः यह कहा जा सकता हैं कि फुले महिलाओं के हितों व उनके अधिकारों के प्रति एक ऐसे संवेदनशील योद्धा थे। जिन्होंने स्त्री से जुड़े लगभग सभी क्षेत्रों– शिक्षा, विवाह, पुर्नविवाह, परिवार आदि को अपने चिंतन का हिस्सा बनाकर नारी मुक्ति का आह्वान किया। प्रस्तुत शोध पत्र शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा ज्योतिबा फुले के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालने के साथ–साथ शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच को बढ़ावा देने, समाज के उत्पीडित वर्गों को सशक्त बनाने एवं सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों की खोज भी करता है।

कीवर्ड– **नारी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, महात्मा ज्योतिबा फुले**

I.परिचय

किसी भी देश के विकास के लिए उस देश की महिलाओं का शिक्षित होना परम आवश्यक है। एक शिक्षित नारी देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास का आधार होती है। हमारे देश में उत्तर वैदिक काल से ही नारी को शिक्षा से वंचित कर दिया गया। इस समय महिलाओं को धार्मिक और राजनीतिक कार्यों से वंचित कर उसकी उन्नति के सभी मार्ग बंद कर दिए गए।[1] 19 वी सदी पुनर्जागरण एवम सामाजिक क्रांति का काल थी, इस समय भारत में अंग्रेजो की नई शिक्षा प्रणाली से एक नया शिक्षित वर्ग पैदा हुआ। जिसमे से कुछ लोगो का ध्यान भारतीय समाज में फैली सामाजिक व धार्मिक कुरीतियों की ओर गया। सामाजिक क्रांति व नारी उत्थान के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले का उनमे प्रमुख स्थान है , इन्होने भारतीय समाज में सामजिक न्याय के आधार पर स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा के प्रचार–प्रसार को आवश्यक मानते हुए कन्या पाठशालाएं एवं महिला छात्रावास आदि खुलवाये।[2] उनका मानना था कि नारी वर्ग को शिक्षित किए बिना सामाजिक क्रांति का सपना पूरा होना असंभव है। महात्मा फुले ने हण्टर कमीशन के समक्ष प्राइमरी शिक्षा पर जोर देने हेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत

किया जो उनका नारी शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा। यह शोध पत्र शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा ज्योतिबा फुले के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालने के साथ–साथ शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच को बढ़ावा देने, समाज के उत्पीडित वर्गों को सशक्त बनाने एवं सामाजिक समानता और न्याय को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों की खोज भी करता है।

अध्ययन के उदेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उदेश्य नारी शिक्षा के लिए महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा किये गए महत्वपूर्ण कार्यो पर प्रकाश डालना है।

शोध परिकल्पना

महात्मा ज्योतिबा फुले नारी शिक्षा के अग्रदूत है।

शोध प्रविधि और सामग्री

इस शोध पत्र की प्रकृति गुणात्मक है, जिसमे ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध विवेचना का आधार द्वितीयक स्रोत– पुस्तकें व शोध पत्र है।

II. महात्मा ज्योतिबा फुले से पूर्व नारी की स्थिति

1 वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति –

वैदिक काल में महिलाओं को उत्कृष्ट स्थान प्राप्त था। वेदकालीन महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के समान प्रतिष्ठित थी। उन्हें अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त थे। जहां महिलाएँ माता, बहन, पुत्री तथा पत्नी प्रत्येक रूप में अपने कर्त्तव्यों को भली–भांति निभाती थी, वहीं पुरूषों के जीवन में महिलाओं का बहुत अधिक महत्व था। वैदिक समाज में पत्नी के बिना यज्ञ भी अपूर्ण माना जाता था। महिला पुरूष की सहयोगिनी तथा सहधर्मिणी होती थी, और इसी कारण महिला को अर्धांगिनी भी कहा गया।[3] इस काल में महिलाओ का उपनयन संस्कार होता था । इस संस्कार के होने के बाद ही बालक बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करते थे। प्रत्येक माता–पिता का यह दायित्व था, कि वह अपनी संतान चाहे वह लडका हो या लड़की उसे शिक्षा दिलाएंगे। कई महिलाएँ ऐसी भी थी जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर शिक्षण कार्य करती थी। जिनमें विश्ववारा, गार्गी, मैत्रेयी, सिक्ता, श्रद्धा, घोषा इत्यादि है, जो ऋषिकाएँ भी कहलाती थी।[4]

2 उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति

ईसा के 600 वर्ष पूर्व से लेकर ईसा के 300 वर्ष बाद तक का युग उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। इस काल में महिलाओं की स्थिति में प्रतिकूल परिवर्तन आना प्रारंभ हो चुका था। महिला के विकसित एवं सम्माननीय मार्ग में अवरोध उत्पन्न होने शुरू हो चुके थे। इस काल में कन्या का जन्म अशुभ समझा जाने लगा तथा लड़के के जन्म को अधिक महत्व दिया जाने लगा। नारी जाति का उपनयन संस्कार बंद कर उन्हे शिक्षा से वंचित कर दिया गया।[5] जिससे समाज में एक नई कुरीति 'बाल–विवाह' का जन्म हुआ, महिलाओं को न तो धार्मिक कार्यों के लिए आवश्यक समझा जाता और न ही राजनीतिक कार्यों के लिए। इस कारण वे धीरे–धीरे घर की चार दीवारी में कैद होने लगी ।

3 धर्मशास्त्र काल महिलाओं की स्थिति

इसे तीसरी शताब्दी से 11वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक माना गया है। इस काल में मनुस्मृति को व्यवहार की कसोटी मानकर वैदिक नियमों को तिलांजलि दे दी गयी, जिसके कारण नारियां सामाजिक और धार्मिक संकीर्ण विचारधारा का शिकार हो गई । मनु ने स्त्री को धार्मिक कार्य यज्ञ आदि के लिए अयोग्य घोषित कर यहां तक कहा कि होम करने पर वह नरक–गामी होती है।[6] मनु ने विवाह के अतिरिक्त स्त्रियों के सब संस्कार बिना मंत्रों के कराने की बात करते हुए लिखा हैं–

नास्ति स्त्रीणां क्रिया मन्त्रैरिति धर्मे व्यवस्थितिः ।

निरिन्द्रिया ह्यमन्त्राश्च स्त्रियोऽनृतमिति स्थितिः ॥[7]

स्त्रियों का संस्कार मंत्रों से नहीं होता यही शास्त्र की मर्यादा है । स्मृति तथा धर्मशास्त्र में और किसी मंत्र में भी इनका अधिकार नहीं है, इसलिये ये झूठ के समान अशुभ हैं । 200 ई. पू० के बाद उपनयन के अभाव एवं यज्ञाधिकार न रहने से स्त्रियों की गणना शूद्रों की कोटि में होने लगी क्योंकि मनुस्मृति में कहा गया कि –

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥[8]

नारी कभी स्वतन्त्र रहने योग्य नहीं, वह बचपन में पिता के युवावस्था में पति के तथा वृद्धावस्था में पुत्र के नियन्त्रण में रहे। स्त्रियों को सम्पत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया और पति की सेवा करना ही उसका परम कर्तव्य माना गया।

4 मध्य काल में महिलाओं की स्थिति

11वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के काल को मध्यकाल माना जाता है। इस काल को स्त्रियों के दृष्टिकोण में काला युग कहा जा सकता है। भारत में राजाओं की आपसी फूट का फायदा बाहरी आक्रमणकारी मुसलमानों ने उठाया और भारत देश पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया। इस काल में नारी की दशा दयनीय हो गई। पर्दा प्रथा ने नारी को घर की चारदीवारी की कैद में रहने के लिए मजबूर कर दिया। बाल विवाहों का बाहुल्य हो गया तथा शिक्षा के द्वार उसके लिए लगभग बंद कर दिये गयें।[9] इसके साथ–साथ सती प्रथा भी अपने सवोच्च शिखर पर पहुंच गई थी। इसे भारतीय नारी का दुर्भाग्य कहें या कुछ और कि उसे एक तरफ देवी बनाकर पूजा जाता है, तो दूसरी ओर सेविका बनाकर शोषण किया जाता है। एक युग था, जब नारी को पत्थर की मूर्तियों पर भेंट चढ़ाया जाता था और अंत में वेश्यालयों में बेच दिया जाता था। आज भी दक्षिण भारत में कुंआरी कन्याओं को देवदासी बना कर मंदिरों में रखा जाता है । यह पुरुष प्रधान व्यवस्था के कारण है, पुरुष अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए नारी का उपयोग एक वस्तु की तरह करता आया है।[10]

III. महात्मा फुले का नारी शिक्षा में योगदान

प्राचीन काल से ही नारी वर्ग शोषण का शिकार होता रहा है। इसलिए इस वर्ग को शिक्षित किए बिना सामाजिक क्रांति का सपना पूरा होना असंभव था। इसलिए महात्मा फुले ने इन्हें शिक्षित करने के कार्यक्षेत्र में काम करने का संकल्प लिया। उनका मानना था कि जब तक समाज की स्त्रियां शिक्षित नहीं होगी, तब तक शिक्षित और सुसंस्कृत समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। आदिकाल से ही माना जाता है कि माता ही बालक की प्रथम गुरु होती है, वह जैसी शिक्षा और संस्कार बच्चों को देगी बच्चे उसी को सीखेंगे और वही शिक्षा व संस्कार घर–परिवार और समाज में दिखाई देगें। अतः सुसंस्कृत समाज के लिए सर्वप्रथम नारी को शिक्षित करना अनिवार्य है। इसीलिए उन्होंने सबसे पहले कन्या पाठशाला खोलने का निर्णय लिया।

महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा सन् 1848 को बुधवार पेठ में मा. भिड़े के मकान में प्रथम कन्या पाठशाला खोली गई[11] जिसकी पहले दिन की पहली घंटी ने भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन का शंखनाद कर दिया। ज्योतिबा ने जब प्रथम कन्या पाठशाला खोली तो कट्टरपंथियों और धर्म के ठेकेदारों का खून खौल उठा, उनका मानना था कि महिलाओं को शिक्षा देना घोर पाप है। उनकी दृष्टि में स्त्रियाँ स्वभाव से दुष्ट, चंचल और विवेकहीन होती है। उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। यदि स्त्रियों को शिक्षित किया जाय तो ये कुमार्गगामी हो जायेगी, घर

परिवार का सुख–चौन हराम कर देंगी। लेकिन फुले ने स्त्री शिक्षा के लिए विरोधियों के विचारों की ओर ध्यान नहीं दिया वे अपने फैसले पर दृढ़ रहे और उसका परिणाम भी उन्हें सकारात्मक मिलने लगा। जोतिबा द्वारा खोली गई देश की प्रथम कन्या पाठशाला में प्रवेश प्राप्त छात्राओं के नाम इस प्रकार थे–

1. अन्नपूर्णा जोशी – उम्र 5 वर्ष
2. सुमती मोकाशी – उम्र 4 वर्ष
3. दुर्गा देशमुख – उम्र 6 वर्ष
4. माधवी थत्ते – उम्र 6 वर्ष
5. सोर पवार – उम्र 4 वर्ष
6. जानी करडिले – उम्र 5 वर्ष ।[12]

अपने पूर्व अनुभव के आधार पर महात्मा फुले ने 3 जुलाई 1851 को दूसरी पाठशाला आरंभ की जिसमें शुरू में आठ लड़कियां आई लेकिन शीघ्र ही यह संख्या 48 हो गई। इस पाठशाला में जहां ज्योतिबा बगैर वेतन के रोज 4 घंटे अध्यापन कर रहे थे वहीं उनकी पत्नी सावित्रिबाई फुले भी स्त्रियों के उत्थान के लिए अनेक कष्ट उठाते हुए शिक्षण कार्य में जुटी हुई थी। पाठशालाऐ दिन–दुनी रात चौगुनी प्रगति करने लगी तत्कालीन मुंबई सरकार द्वारा पूना और उसके आस–पास के तालुका व गांव आदि में जोतिबा द्वारा 18 पाठशालाएं खोले जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[13]

तत्कालीन बॉम्बे गार्डियन समाचार पत्र ने महात्मा फुले के सम्मान में समाचार प्रकाशित किया तथा उसमें उन्होंने लिखा कि, युवक जोतीराव फुले ने कुछ वर्ष लगातार कार्य करके अपने देशवासियों में शिक्षा का प्रसार करके बहुत बड़ी प्रगति की।[14]

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि जिस देश में आदि शक्ति के रूप में नारी की कल्पना की गई हो उस देश में नारी की स्थिति निम्न स्थिति पर पहुंच गई थी। महात्मा ज्योतिबा फुले ने अपने द्वारा खोली गई कन्या पाठशाला में निम्न जातियों की लड़कियों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया, इनके अतिरिक्त अन्य वर्ग की बालिकाओं को जिन्हें शिक्षा में रूचि थी, उनके लिए भी प्रवेश द्वार खोल दिये। उन्होंने अपने विद्यालय में अंकगणित और व्याकरण के मूलभूत सिद्धान्त जैसे विषय पढ़ाने के लिये चुने। स्त्री शिक्षण के कार्य में बाधा डालने के लिए फुले के जाति बंधुओं के जरिये कट्टरपंथी ब्राह्मणों ने उनके पिता गोविन्दराव तक यह धमकी पहुंचायी कि पाठशाला बंद नहीं की तो तुम्हें परिणाम भुगतने होंगे। सामाजिक दबाव पड़ने पर गोविन्दराव ने ज्योतिबा को शैक्षणिक कार्य बंद करने के लिए कहा लेकिन ज्योतिबा फुले नहीं माने, परिणाम स्वरूप उनके पिता गोविंदराव ने उन्हें घर से निकाल दिया[15] लेकिन फिर भी ज्योतिबा फुले ने हार नहीं मानी और शैक्षिक कार्य में तेजी लाने के लिए उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को भी शिक्षित कर शिक्षक के रूप में कार्य करने के लिए खड़ा कर दिया। एक हिन्दू स्त्री द्वारा शिक्षा प्रदान करने का कार्य कराने पर उन्हें समाजद्रोही और धर्मद्रोही करार दिया गया। यही नहीं जब सावित्रीबाई विद्यालय जाती तो इन कट्टरपंथियों के अनुयायियों द्वारा उन पर फिकरेबाजी की जाती और छीटे कसे जाते, कीचड़ और पत्थर फेंके जाते। महात्मा ज्योतिबा फुले के कार्यकाल में समाज की विचारधारा बहुत ही अपरिपक्व थी। अनीति, संकुचित भावना समाज के मन पर हावी थी। उस समाज को प्रबोधित करके ऊपर उठाने के लिये उनको शिक्षित करना यही एक उपाय था। यह कार्य बड़ी लगन के साथ पूरी शक्ति लगाकर उन्होंने किया। शिक्षा को लेकर महात्मा फुले के द्वारा किए जा रहे कार्यों की खबर जब महारानी विक्टोरिया को हुई तो उन्होंने भी ज्योतिबा के कार्य की प्रशंसा की। बम्बई सरकार ने अपने गवर्नर की अध्यक्षता में 16–11–1852 को पूणे के विश्राम बागवाड़े में सार्वजनिक अभिनंदन करके उन्हें दो सौ रुपये की कीमती शाल सम्मान के तौर पर भेंट की।[16]

अपनी पुस्तक गुलाम गिरी में ज्योतिबा लिखते हैं, कि जब मैने अछूतों के लडके–लडकियों के लिये स्कूल शूरू किये, उस समय अनेक यूरोपियन गृहस्थीयों ने मेरी बहुत बडी मात्रा में आर्थिक सहायता की । उन उदार गृहस्थों में रेव्हिन्यू कमिश्नर रीव्हज साहब ने जो आर्थिक सहायता की, उसको मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ।[17] महात्मा ज्योतिबा फुले ने शिक्षा के महत्व को दर्शाते हुए बहुत ही सुंदर कहा था।

विद्या बिना मति गयी ! मति बिना नीति गयी !

नीति बिना गति गयी ! गति बिना वित्त गया !

वित्त विना शुद्र गये! इतने अनर्थ अविद्या ने किये !

पुस्तक गुलामगिरी (हिंदी संस्करण)

ये पंक्तियाँ शिक्षा के बारे में ज्योतिबा फुले जी का विचार स्पष्ट करती हैं। महात्मा ज्योतिबा ने 1855 ई. में प्रौढ़ शिक्षा को आरम्भ किया। उन्होंने खेतों में या अन्य जगह काम करने वाले मजदूरों और गृहणियों के लिए रात्रि पाठशालाएं खोलीं एवं अध्यापन कार्य चलाया।[18] यह भारत की पहली रात्रि पाठशाला व प्रौढ़शाला थी। उस समय शिक्षा घर–घर पहुंचाने की पहल चल रही थी। ज्योतिबा फुले ने श्रमिकों के लिए रात्रि पाठशाला खोलकर उन लोगों का शिक्षा की तरफ ध्यान आकर्षित किया था। शिक्षा प्रत्येक को समान मात्रा में मिलनी चाहिए और उसमें कोई भी भेदभाव नही होना चाहिए इसलिये 24 सितंबर 1873 को उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। जिसमें उनके तीन ब्राह्मण मित्र विनायक बापूजी भंडारकर, विनायक बापूजी डेगले और सखाराम दातार की मुख्य भूमिका रही।[19] महात्मा ज्योतिबा फुले का शिक्षा दर्शन उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं। महात्मा ज्योतिबा फुले के शैक्षिक कार्यों से प्रभावित होकर ही भारत रतन बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी ने भी उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। आज भी भारतवर्ष में जिनके जीवन को समाज उद्धार के प्रति समर्पित कहा जा सकता हैं, उनमें अग्रणी नाम ज्योतिबा फुले का ही आता है।

IV. निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ज्योतिबा फुले जिन्हें लोग आदर से "महात्मा फुले" भी कहते हैं, के द्वारा नारी शिक्षा की जो नीव रखी गयी थी उसका सुखद अनुभव वर्तमान में हमारे सामने है। महात्मा फुले का उद्देश्य केवल सामाजिक सुधार ही नहीं था वे तो एक वर्गहीन और शोषणमुक्त समाज चाहते थे। उनका मानना था कि इस परम्पराविधि हिन्दू समाज में शूद्र अतिशूद्र और स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिये जाने से वे अज्ञानरूपी अंधकार में भटक गये है, और अपने आप को तथा अपने स्वत्व की सत्ता को पहचान ही नहीं पा रहे है। इसलिए जब तक इन वर्गों को शिक्षित नहीं किया जाता तब तक ये जागृत नहीं हो सकेंगे। इनकी जागृति के बिना सामाजिक सुधार संभव नहीं है इसलिए वे इन दोनों वर्गों को शिक्षित कर उनका उद्धार करने का कार्य आजीवन करते रहे। इस प्रकार हम कह सकते है कि महात्मा ज्योतिबा फुले नारी शिक्षा के अग्रदूत थे। नारी उत्थान हेतु उनके द्वारा किए गए प्रयास अभूतपूर्व व अद्वितीय हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- यादव, शैलेन्द्र कुमार : भारतीय महिलाओं का शोषणः वैदिक काल से अब तक, International Journal of Scientific Research in Science and Technology (www-ijsrst-com) ©2017 IJSRST Volume 3 Issue 7 Print ISSN: 2395–6011 | Online ISSN: 2395–602X, Page no–1247

2. आचार्य, डॉ हेमलता, भारत की सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, 2021, ISBN: 978–93–91503–30–7,नई दिल्ली–110063, पृष्ठ– 85,

3. आनंद, अन्विता : गुप्तकाल में नारियों की स्थिति, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1992, पृ.सं.–8

4. सिंह, बी.एन.: आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2010, पृ.सं.–43

5- यादव, शैलेन्द्र कुमार : भारतीय महिलाओं का शोषणः वैदिक काल से अब तक, International Journal of Scientific Research in Science and Technology (www-ijsrst-com)

©2017 IJSRST Volume 3 Issue 7 Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X, Page no- 1247-

6. डॉ अराधना, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2015, ISSN: 978–81–88791–52–1,पृष्ठ–15.
7. पंडित रामेश्वर भट्ट, मनुस्मृति, चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2019, नई दिल्ली–110002, पृष्ठ–244,
8. वही पृष्ठ–242,
9. कटारिया, कमलेश: नारी जीवन : वैदिक काल से आज तक, यूनिक ट्रेडर्स प्रकाशन, जयपुर, 2009, पृ.सं.–30
10. यादव, शैलेन्द्र कुमार : भारतीय महिलाओं का शोषणः वैदिक काल से अब तक, International Journal of Scientific Research in Science and Technology (www-ijsrst-com) ©2017 IJSRST Volume 3 Issue 7 Print ISSN: 2395–6011 | Online ISSN: 2395-602X, Page no- 1248
11. आचार्य, डॉ हेमलता, भारत की सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक ज्योतिबा फुले, सम्यक प्रकाशन, 2021, ISBN: 978–93–91503–30–7,नई दिल्ली–110063, पृष्ठ– 85,
12. वही पृष्ठ– 88,
13. वही पृष्ठ– 89,
14. आगलावे, डॉ सरोज, जोतीराव फुले का सामाजिक दर्शन, सम्यक प्रकाशन, 2023,ISBN: 978–81–961960–0–4, नई दिल्ली–110063, पृष्ठ– 149,
15. जगताप, मुरलीधर, सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले, गौतम बुक सेंटर, 2021, ISBN :81–87733–75–6, दिल्ली–110032, पृष्ठ– 44,
16. वही पृष्ठ– पृष्ठ– 51,
17. फुले,जोतीराव गोविंदराव , गुलाम गिरी, अनुवादक– प्रभाकर गजभिये ,सुधीर प्रकाशन, 2022,वर्धा महाराष्ट्र, पृष्ठ– 139,
18. कुमार, मनोज, स्त्री शिक्षा में महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले का योगदान, Journal Of Acharya Narendra Dev Research Institute, ISSN: 0976-3287, Vol 28 (Jun2019-Aug2019), पृष्ठ–169,
19. कुमार, डॉ विनय, समाज सुधार में महात्मा फुले का योगदान (1827–1890), International Journal of Creative Research Thought (IJCRT), Www-ijcrt-org .Volume 5, Issue 4 December 2017, ISSN: 2320-2882, Page no– 41,